उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग राजकीय इण्टर कालेज प्रवक्ता परीक्षा, 2021

संस्कृतम्

व्याख्या सहित हल प्रश्न-पत्र

1. ध्वनिनियमप्रवर्त्तकाः यथाक्रमं संयोजनीयः शुद्धं विकल्पं च चिनुत –

(1) ग्रासमाननियमः (2) ग्रिमनियमः
(3) वर्नरनियमः (4) तालव्यनियमः

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	3	2	1	4
(b)	2	1	3	4
(c)	4	2	1	3
(d)	3	4	2	1

Ans. (b) : ध्वनिनियमप्रवर्त्तकाः यथाक्रमं संयोजनीयः शुद्धं विकल्पं इति- ग्रिमनियमः- ग्रासमाननियमः- वर्नरनियमः- तालव्यनियमः।

(1) ग्रिमनियमः- यह ध्वनि नियम प्रो. याकोब (जेकब) ग्रिम के नाम से प्रसिद्ध है।

ग्रिमनियम के अनुसार मूल भारोपीय भाषा की निम्नलिखित ध्वनियाँ अंग्रेजी और जर्मन भाषा में ये ध्वनियाँ हो जाती हैं-

प्रथम को द्वितीय 1 को 2 क्रमशः क् त् प् को ख् थ् फ् (द्वितीय को तृतीय 2 को 3) क्रमशः ख् थ् फ् (घ् ध् भ्) को ग् द् ब् (तृतीय को प्रथम 3 को 1) क्रमशः ग् द् ब् को क् त् प्।

(2) ग्रासमान नियमः- मूल भारोपीय दो अक्षर वाली धातुओं में दो महाप्राण (ह्) ध्वनियाँ थी। सामान्यतया प्रथम महाप्राण (ह्) ध्वनि हट जाती है। द्वितीय वर्ण में महाप्राण (ह्) ध्वनि हटने पर प्रथम वर्ण में महाप्राण ध्वनि रहती है।

(3) वर्नर नियमः- यह ग्रिम नियम का संशोधन है। यदि उदात्त स्वर क् त् प् आदि से पूर्व (उदात्त स्वर) होगा, तो ग्रिम नियम लगेगा (उदात्त स्वर)। यदि बाद में हो क् त् प् को ग् द् ब् होगा।

(4) तालव्य-नियमः– की खोज के फलस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि जिन संस्कृत शब्दों में अ स्वर ध्वनि की दृष्टि से ग्रीक या लैटिन ओ का स्थानापन्न है, उसके पूर्व क् या ग् ही व्यञ्जन पाया जाता है। एक ही धातु पच् से बने रूप पचति और पकस् में भी यह बात देखी जा सकती है। इससे निष्कर्ष यह निकलता है कि किसी समय संस्कृत में अ के स्थान पर ई (e) और ओ (o) स्वर थे अग्रस्वर 'इ' के पूर्व का कण्ठ व्यंञ्जन के तालव्य हो जाने से इसे तालव्य नियम कहा जाता है।

2. नित्यनपुंसकलिङ्गे एकवचने समासो प्रयुक्तो भवति –

(a) कर्मधारयः (b) अव्ययीभावः
(c) द्वन्द्वः (d) द्विगुः

Ans. (b) : नित्यनपुंसकलिङ्गे एकवचने अव्ययीभावः समासो प्रयुक्तो भवति। नित्य नपुंसकलिङ्ग के एकवचन में अव्ययीभाव समास होता है।

'अव्ययीभाव' अर्थात् जो अव्यय नहीं था उसका अव्यय हो जाना ही अव्ययीभाव है। अव्ययीभाव समास में प्रायः दो पद रहते हैं, इनमें से प्रथम पद प्रायः अव्यय रहता है और दूसरा पद संज्ञा शब्द, दोनों मिलकर अव्यय हो जाते हैं। किसी अव्ययीभाव शब्द के रूप नहीं चलते। अन्तिम शब्द 'नपुंसकलिङ्ग' के एकवचन जैसा रूप होता है। सूत्र-अव्ययीभावश्च 02/04/18 इस सूत्र के अनुसार अव्ययीभाव नपुंसकलिङ्ग में होता है।

जैसे-यथाकामम् = काममनतिक्रम्य इति यथाकामम्

3. 'अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्' सूक्तिरियमुद्धृताऽस्ति –

(a) शिवराजविजयात् (b) शिशुपालवधात्
(c) किरातार्जुनीयात् (d) नीतिशतकात्

Ans. (d) : 'अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्' सूक्ति नीतिशतके उद्धृतम् अस्ति। प्रस्तुत सूक्तिपरक वाक्य भर्तृहरि कृत नीतिशतकम् के मूर्ख पद्धति से अवतरित है।
नीतिशतकम् में कुल 11 पद्धतियाँ तथा 111 श्लोक हैं। नीतिशतक मुक्तक काव्य है।

बोद्धारो मत्सरग्रस्ताः प्रभवः स्मयदूषिताः।
अबोधोपहताश्चान्ये जीर्णमङ्गे सुभाषितम्॥2॥

विद्वानों के ईर्ष्याग्रस्त होने तथा राजाओं के राजमद से चूर होने के कारण और शेष लोगों के अज्ञानता के कारण भर्तृहरि का ज्ञान उनके शरीर में ही जीर्ण हो गया।

4. पूर्वरूपसन्धेरुदाहरणमस्ति –

(a) वाप्यश्वः (b) गौर्यौ
(c) हरेऽव (d) प्रेजते

Ans. (c) : पूर्वरूपसन्धेरुदाहरणम् अस्ति– हरेऽव। यहाँ पर पूर्वरूप सन्धि है।

सूत्र-'एङः पदान्तादति' सूत्र द्वारा संहिता के विषय में यदि पद के अन्त में एङ् (ए, ओ) स्वर आए और उसके बाद ह्रस्व 'अ' आए तो पूर्व एवं पर वर्णों के स्थान पर पूर्वरूप एकादेश हो जाता है तथा अकार की स्पष्ट प्रतीति के लिए अवग्रह चिह्न (ऽ) हो जाता है।

5. वैदिककालनिर्णये विद्वन्मतेषु शुद्धं विकल्पं चिनुत –

(1) मैक्समूलरमतेन – छन्दःकालः – मन्त्रकालः – ब्राह्मणकालः – सूत्रकालः
(2) लोकमान्यतिलकमतेन – अदितिकालः – मृगशिराकालः – कृत्तिकाकालः – अन्तिमकालः

विकल्पाः –

(a) (1) सत्यमस्ति
(b) (2) सत्यमस्ति
(c) (1) एवं (2) असत्यकथनमस्ति
(d) (1) एवं (2) सत्यकथनमस्ति

Ans. (d) : वैदिककालनिर्णये विद्वन्मतेषु शुद्धं विकल्पं d अस्ति।
(क) प्रो. मैक्समूलर मतानुसार समग्र वैदिककाल को चार विभागों में बाँटा गया है–
(1) छन्दकाल (2) मन्त्रकाल (3) ब्राह्मणकाल (4) सूत्रकाल। इसमें प्रत्येक युग की विचारधारा के उदय तथा ग्रन्थ रचना के लिए उन्होंने 200 वर्षों का काल माना है।
(1) छन्दकाल -1200 से 1000 विक्रमपूर्व (ई.पू.)
(2) मन्त्रकाल -1000 से 800 विक्रमपूर्व (ई.पू.)
(3) ब्राह्मणकाल- 800 ई.पू. 600 विक्रमपूर्व (ई.पू.)
(4) सूत्रकाल- 600 ई.पू. से 200 ई.पू. तक
(ख) तिलक का मत- लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने ऋग्वेद में उपलब्ध ज्योतिष विषयक साक्ष्यों के आधार पर वेदों का काल (4000 से 6000) विक्रमपूर्व स्वीकार किया है।
तिलक जी ने वैदिक काल को चार विभागों में रखा है।

(1) अदितिकाल - 6000 ई.पू. से 4000 विक्रम पूर्व तक
(2) मृगशिराकाल - 4000 ई.पू. से 2500 विक्रम पूर्व तक (ऋग्वेद संहिता का अन्तकाल)
(3) कृत्तिका काल - 2500 से 1400 ई.पू. विक्रम पूर्व तक (तैत्तिरीय संहिता व ब्राह्मणकाल)
(4) अन्तिम काल - 1400 से 500 विक्रमपूर्व तक (सूत्र ग्रन्थों का रचनाकाल)
(1) एवं (2) सत्यकथनमस्ति

6. उपरिलिखितेषु वेदान्तमते असमीचीनं कथनं चिनुत –
(a) काम्यकर्माणि स्वर्गादिसाधनानि
(b) निषिद्धानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(c) नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि
(d) नैमित्तिकानि प्रायश्चित्तादीनि कर्माणि पापक्षयादिसाधनानि

Ans. (c) : उपरिलिखितेषु वेदान्तमते असमीचीनं कथनं अस्ति।
नित्यानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि।
उपर्युक्त कथन वेदान्त के मत में असमीचीन (असत्य) कथन है। जबकि अन्य तीनों कथन वेदान्त के मत में सही है।
(1) काम्यकर्माणि स्वर्गादिसाधनानि-ज्योतिष्टोम याग आदि
(2) निषिद्धानि कर्माणि अनिष्टसाधनानि-ब्राह्मणहनन आदि
(3) नैमित्तिकानि प्रायश्चित्तादीनि कर्माणि पापक्षयादि साधनानि-जातेष्टि यज्ञ
नोटः- सन्ध्यावन्दन आदि नित्य कर्म हैं।

7. अधस्तनेषु कृष्णयजुर्वेदीया उपनिषद् नास्ति –
(a) तैत्तिरीयोपनिषद् (b) कठोपनिषद्
(c) केनोपनिषद् (d) श्वेताश्वरोपनिषद्

Ans. (c) : वेद चार हैं– ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद ,अथर्ववेद। प्रत्येक वेद के अपने-अपने उपनिषद् है।

वेद	**उपनिषद्**
ऋग्वेद -	ऐतरेय, शांखायन (कौषीतकि)
यजुर्वेद - शुक्ल यजुर्वेद,	- ईशोपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्
कृष्ण यजुर्वेद	- तैत्तिरीय, कठ, श्वेताश्वर
सामवेद -	छान्दोग्य, केनोपनिषद्
अथर्ववेद -	प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य

नोटः– केनोपनिषद – सामवेद का उपनिषद् है।
अतः विकल्प (c) सही है।

8. 'आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि' इति केनोक्तम्?
(a) शकुन्तलया (b) गौतम्या
(c) वैखानसेन (d) दुष्यन्तेन

Ans. (c) : आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि इति वैखानसेन उक्तम्।
यह उक्ति कालिदास कृत अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अङ्क में राजा दुष्यन्त द्वारा मृग का शिकार करने के अवसर पर वैखानस कहता है-
तत् साधुकृत सन्धानं प्रतिसंहर सायकम् ।
आर्तत्राणाय वः शस्त्रं न प्रहर्तुमनागसि ॥ (1.11)
⇒ अच्छे प्रकार से धनुष पर चढ़ाए हुए अपने बाण को उतार लीजिए आपका शस्त्र दुःखितों की रक्षा के लिए है न कि निरीह पशुओं पर प्रहार करने के लिए।
अभिज्ञानशाकुन्तलम् में कुल सात अंक हैं।
यह एक नाटक ग्रन्थ है। प्रधान रस-शृंगार है।

9. वैशेषिकदर्शनानुसारं सप्तपदार्थेषु न गण्येते। शुद्धं विकल्पं चिनुत –
(1) पुरुषः (2) विशेषः
(3) गुणः (4) अहङ्कारः
विकल्पाः –
(a) (1) एवं (3) (b) (2) एवं (3)
(c) (1) एवं (4) (d) (3) एवं (4)

Ans. (c) : वैशेषिक दर्शनानुसारं पुरुषः, अहङ्कारः सप्तपदार्थेषु न गण्येते। शुद्ध विकल्प (c) सही है। वैशेषिक दर्शन के अन्तर्गत पुरुष एवं अहङ्कार नहीं आते क्योंकि ये सांख्य की सृष्टि प्रक्रिया के अन्तर्गत निहित हैं।
⇒ वैशेषिक दर्शन के सात पदार्थ निम्नवत हैं-
(1) द्रव्य (2) गुण (3) कर्म (4) सामान्य
(5) विशेष (6) समवाय (7) अभाव।

10. 'यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य। यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।।' इत्यत्र कोऽलङ्कारः?
(a) लाटानुप्रासः (b) छेकानुप्रासः
(c) यमकम् (d) श्लेषः

Ans. (a) :
यस्य न सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।
यस्य च सविधे दयिता दवदहनस्तुहिनदीधितिस्तस्य।। इत्यत्र लाटानुप्रासालङ्कारः
अनुप्रासालंकारः - वर्णसाम्यमनुप्रासः। (काव्य प्रकाश)
इस अलंकार में किसी व्यञ्जन वर्ण की आवृत्ति होती है। आवृत्ति का मतलब दुहराना अर्थात् जब किसी वाक्य में कोई व्यञ्जन वर्ण या पद अथवा वाक्यांश लगातार आकर उसके सौन्दर्य को बढ़ा दे तब वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
अनुप्रास अलंकार के 5 भेद हैं–
(1) छेकानुप्रास (2) वृत्यानुप्रास
(3) लाटानुप्रास (4) अन्त्यानुप्रास (5) श्रुत्यानुप्रास
लाटानुप्रास - में तात्पर्य मात्र का भेद पाया जाता है।

11. अधोलिखितेषु पदेषु प्रत्ययान् परस्परं सुमेलयन् शुद्धं विकल्पं चिनुत –

सूची-I	**सूची-II**
(a) गृहम्	(1) ष्ट्रन
(b) मृज्यः	(2) क
(c) नन्दनः	(3) ल्यु
(d) नेत्रम्	(4) क्यप्

विकल्पा :–

	A	**B**	**C**	**D**
(a)	3	4	2	1
(b)	2	4	1	3
(c)	2	4	3	1
(d)	4	2	3	1

Ans. (c) : अधोलिखितेषु पदेषु प्रत्ययान् परस्परं सुमेलयन् शुद्धं विकल्पम् (c) अस्ति।

सूची-I	सूची-II
(a) गृहम्	क
(b) मृज्यः	क्यप्
(c) नन्दनः	ल्यु
(d) नेत्रम्	ष्ट्रन्

12. 'लक्ष्मीच्छाया' इत्यत्र केन सूत्रेण तुगागमः जातः?
(a) पदान्ताद् वा (b) छे च
(c) शि तुक् (d) न कोऽपि पूर्वेषु

Ans. (a) : 'लक्ष्मीच्छाया' इत्यत्र पदान्ताद् वा सूत्रेण तुगागमः जातः दीर्घात् पदान्तात् छे तुक् वा। लक्ष्मीच्छाया/लक्ष्मीछाया इति हलसन्धिः।
पदान्त दीर्घ को छकार परे रहते तुक् आगम विकल्प से हो।
लक्ष्मी + छाया = लक्ष्मीच्छाया/लक्ष्मीछाया (लक्ष्मी की कान्ति) यहाँ भी साधन प्रक्रिया 'शिवच्छाया के समान ही होगी।

13. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां संयोज्य शुद्धं विकल्पं चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(a) उपादान लक्षणा	(1) गङ्गायां घोषः
(b) लक्षणलक्षणा	(2) गौर्वाहीकः
(c) सारोपालक्षणा	(3) गौरयम्
(d) साध्यवसानालक्षणा	(4) यष्टयः प्रविशन्ति

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	4	2	3	1
(c)	4	3	2	1
(d)	1	2	4	3

Ans. (a) : अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां संयोज्य शुद्धं विकल्पं (a) अस्ति।

	सूची-I	सूची-II
(a)	उपादान लक्षणा	यष्टयः प्रविशन्ति
(b)	लक्षणलक्षणा	गङ्गायां घोषः
(c)	सारोपालक्षणा	गौर्वाहीकः
(d)	साध्यवसानालक्षणा	गौरयम्

अतः सुमेलित विकल्प (A) सही है।

14. सायणभाष्यसहितं ऋग्वेदं सर्वप्रथमं यः सम्पादयामास सोऽस्ति पाश्चात्यविद्वान् –

(a) ओल्डेनबर्ग (b) हिल्लेब्राण्टः
(c) मैक्समूलरः (d) मैक्डोनलः

Ans. (c) : सायणभाष्यसहितं ऋग्वेदं सर्वप्रथमं यः सम्पादयामास मैक्समूलरः अस्ति। आचार्य सायण (चौदहवीं सदी, मृत्यु 1387 ई.) वेदों के सर्वमान्य भाष्यकर्ता थे। सायण ने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है।
सायण ने अपनी रचनाओं में अपने चरित्र के विषय में आवश्यक तथ्यों का निर्देश किया है। ये दक्षिण भारत के निवासी थे इनके पिता का नाम-मायण और माता-श्रीमती थीं। सायण ने इन सुप्रसिद्ध वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रन्थों के ऊपर अपने भाष्यों की रचना की है-
(1) तैत्तिरीय संहिता (कृष्णयजुर्वेद) (2) ऋग्वेद संहिता
(3) सामवेद संहिता (4) काण्व संहिता (शुक्ल यजुर्वेद) (5) अथर्ववेद संहिता।
⇒ पाश्चात्य विद्वान मैक्समूलर ने सर्वप्रथम 'सायण-भाष्य' सहित ऋग्वेद का सम्पादन किया था इसका प्रारम्भ 1848 ई. में हुआ और 1875 ई. में पूर्ण हुआ।

15. अखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः कोऽस्ति?

(a) प्राज्ञः (b) अधिकारी
(c) ईश्वरः (d) जीवन्मुक्तः

Ans. (d) : अखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः जीवन्मुक्तः अस्ति।
यह जीवन्मुक्ति का लक्षण है-

भिद्यते हृदयग्रन्थिरिछद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥

समस्त बन्धों से रहित हो जाने से केवल ब्रह्म में ही तत्पर रहने वाले ब्रह्मनिष्ठ को ही जीवन्मुक्त कहते हैं– अखिलबन्धरहितो ब्रह्मनिष्ठः जीवन मुक्तः।

16. 'नाहं मूर्तिविंक्रीणाणि किन्तु भिनद्मिः'शिवराजविजये केनोक्तम्?

(a) शहाबुद्दीनेन (b) औरङ्गजेबेन
(c) महमूदगजनव्या (d) कुतुबुद्दीनेन

Ans. (c) : नाहं मूर्तिर्विक्रीणाणि किन्तु भिनद्मिः शिवराजविजये महमूदगजनव्या उक्तम्।
उपर्युक्त सूक्ति शिवराजविजयम् के प्रथम निःश्वास में निहित है। इसमें महमूद गजनवी कहता है कि वह मूर्ति बेचता नहीं किन्तु तोड़ता है। अम्बिकादत्तव्यास कृत 'शिवराजविजयम्' में तीन विराम और 12 निःश्वास हैं तथा प्रत्येक विराम में 4 निःश्वास हैं। यह प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है।

17. अधोलिखितसूचीद्वयं सुमेलयन् शुद्धं विकल्पं चिनोतु–

सूची-I	सूची-II
(a) प्रातिपदिकम्	(1) आदैच्
(b) वृद्धि	(2) सुप्तिङन्तं
(c) पदम्	(3) अचोऽन्त्यादि
(d) टि	(4) अर्थवदधातुरप्रत्ययः

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	2	1	3	4
(b)	3	2	1	4
(c)	4	1	2	3
(d)	1	3	2	4

Ans. (c) : अधोलिखित सूचीद्वयं सुमेलन शुद्धं विकल्प अस्ति।

	सूची-I	सूची-II
(a)	प्रातिपदिकम्	अर्थवदधातुरप्रत्ययः
(b)	वृद्धि	आदैच्
(c)	पदम्	सुप्तिङन्तं
(d)	टि	अचोऽन्त्यादि

18. बौद्धदर्शनस्य मान्यः सिद्धान्तोऽस्ति –

(a) स्यादवादः (b) प्रतीत्यसमुत्पादवादः
(c) मायावादः (d) आत्मवादः

Ans. (b) : बौद्धदर्शनस्य मान्यः सिद्धान्तो प्रतीत्यसमुत्पादवादः अस्ति। बौद्ध दर्शन से अभिप्राय उस दर्शन से है जो भगवान बुद्ध के निर्वाण के बाद बौद्ध धर्म के विभिन्न सम्प्रदायों द्वारा विकसित किया गया और बाद में पूरे एशिया में उसका प्रसार हुआ।
'प्रतीत्यसमुत्पाद' से तात्पर्य एक वस्तु के प्राप्त होने पर दूसरी वस्तु की उत्पत्ति अथवा एक कारण के आधार पर एक कार्य की उत्पत्ति से है। प्रतीत्यसमुत्पाद सापेक्ष और निरपेक्ष की दृष्टि से निर्वाण तथा क्षणिकवाद की भाँति शाश्वतवाद और उच्छेदवाद के मध्य का मार्ग भी है, इसीलिए इसे मध्यममार्ग कहा जाता है और इसको मानने वाले माध्यमिक कहे जाते हैं।
इस चक्र के बारह क्रम हैं, जो एक दूसरे को उत्पन्न करने के कारण हैं, वह इस प्रकार हैं–
(1) अविद्या (2) संस्कार (3) विज्ञान (4) नाम-रूप (5) षडायतन (6) स्पर्श (7) वेदना (8) तृष्णा (9) उपादान (10) भव (11) जाति (12) जरा-मरण।

19. भगवद्गीतानुसारं समत्वस्य शब्दार्थोऽस्ति –

(a) समतावादः (b) समदर्शनम्
(c) समतायाः स्वभावः (d) योगः

Ans. (b) : भगवद्गीतानुसारं समत्वस्य शब्दार्थो 'समदर्शनम्' अस्ति। अर्थात् भगवद्गीता के अनुसार समत्व का शब्दार्थ समदर्शन है गीता के द्वितीय अध्याय में यह श्लोक वर्णित है।
'समत्वं योगः उच्यते-समता ही योग है अर्थात् समता परमात्मा का स्वरूप है वह समता अन्तः करण में निरन्तर बनी रहनी चाहिये आगे पाँचवे अध्याय के उन्नीसवें श्लोक में भगवान कहते हैं कि जिनका मन समता में स्थित हो गया है, उन लोगों ने जीवित अवस्था में ही संसार को जीत लिया है क्योंकि ब्रह्म निर्दोष और सम है। अतः उनकी स्थिति ब्रह्म में ही है।

20. 'यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने' इत्यत्र '<u>अवसा</u>' पदस्य कोऽर्थः?
(a) बलेन (b) बलार्थम्
(c) कर्मणा (d) रक्षणार्थम्

Ans. (d) : 'यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने' इत्यत्र अवसा' पदस्य अर्थः रक्षणार्थम् अस्ति। यह मन्त्र हिरण्यगर्भ सूक्त से अवतरित है। यह सूक्त 10वें मण्डल के 121 सूक्त से है। इसमें 10 मन्त्र, ऋषि-हिरण्यगर्भ। देवता- क संज्ञक प्रजापति, छन्द- त्रिष्टुप्।

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

प्राणियों की रक्षा के लिए स्थिर बनाए गए तथा मन से काँपते हुए द्युलोक और पृथ्वीलोक जिस (प्रजापति) की ओर देखते हैं, जिसे आधार बना कर सूर्य उदित होकर चमकता है। (उसके अतिरिक्त) किस देवता के लिए हवि से विधान करें।

21. षड्विधसन्निकर्षेषु प्रथमः कः?
(a) संयोगः (b) समवायः
(c) संयुक्तसमवायः (d) समवेतसमवायः

Ans. (a) : षड्विधसन्निकर्षेषु प्रथमः संयोगः।
तर्कसंग्रह में अन्नंभट्ट ने न्यायदर्शन के अनुसार चार प्रमाण स्वीकार किये हैं- प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द। इन्द्रियार्थसन्निकर्ष का प्रसंग प्रत्यक्ष प्रमाण के अन्तर्गत आता है प्रत्यक्ष प्रमाण के ज्ञान के लिए सन्निकर्ष का ज्ञान होना अपरिहार्य है। अन्नंभट्ट प्रत्यक्ष ज्ञान हेतु इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष को छः प्रकार का बताते हैं।
प्रत्यक्षज्ञानहेतुरिन्द्रियार्थसन्निकर्षः षड्विधः– संयोगः, संयुक्तसमवायः, संयुक्तसमवेतसमवायः, समवायः, समवेतसमवायः विशेषणविशेष्य भावश्चेति।
संयोग सन्निकर्ष दो द्रव्यों के सन्निकर्ष को संयोग सन्निकर्ष कहते हैं। चक्षु का उसके विषय से सन्निकर्ष संयोग है। इसी प्रकार मन और आत्मा का भी सन्निकर्ष संयोग है जैसे-घट के ज्ञान में चक्षु का घट से सन्निकर्ष संयोग है। चक्षुषा घट प्रत्यक्षजनने संयोगः सन्निकर्षः। तालिका निम्न है–
संयोग सन्निकर्ष– चक्षु का घट से।
संयुक्त समवाय सन्निकर्ष– चक्षु का घट रूप से।
संयुक्त समवेत समवाय– चक्षु का घट रूपत्व जाति से।
समवाय सन्निकर्ष– श्रोत का शब्द से।
समवेत समवाय सन्निकर्ष–श्रोत का शब्दत्व से।
विशेषण विशेष्य भाव सन्निकर्ष–श्रोत का भूतले घटाभाव से।

22. 'ऋहलोर्ण्यत्' इति सूत्रस्योदाहरणमस्ति –
(a) हार्यम् (b) लभ्यम्
(c) स्तुत्यः (d) मृज्यः

Ans. (a) : ऋहलोर्ण्यत् इति 'हार्यम्' सूत्रस्योदाहरणमस्ति-
ऋहलोर्ण्यत् इस सूत्र का उदाहरण हार्यम् है।
सूत्र-ऋहलोर्ण्यत्-
ऐसी धातुएँ जिनका अन्तिम वर्ण ऋकार अथवा व्यञ्जन हो, उनके उपरान्त कृत्य प्रत्यय ण्यत् (य) का प्रयोग होता है। इसके पूर्व धातुओं के स्वर की वृद्धि हो जाती है। यदि उपधा में आकार हो, तो उसकी (आ) वृद्धि हो जाती है और यदि कोई स्वर हो, तो वह बहुधा गुण को प्राप्त होता है। इसके अन्य उदाहरण- कार्यम्, हार्यम्, आर्य आदि हैं।

23. 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवः' इत्यनेन सम्बद्धं सूक्तमस्ति–
(a) वाक्सूक्तम् (b) शिवसङ्कल्पसूक्तम्
(c) नासदीयसूक्तम् (d) यम-यमी सूक्तम्

Ans. (b) : 'यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवः' शिवसङ्कल्पसूक्तम् सम्बद्धं अस्ति। उपर्युक्त मन्त्र शिवसंकल्प सूक्त से लिया गया है। शिवसंकल्प सूक्त में कुल 06 मन्त्र हैं। इसमें त्रिष्टुप् छन्द का प्रयोग हुआ है। शिवसंकल्प सूक्त 'शुक्लयजुर्वेद' से लिया गया है। इसके अन्य महत्त्वपूर्ण मन्त्र हैं-
(1) यदपूर्वं यक्षमन्तः प्रजानां तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु,
(2) यस्मिन्नृचः साम यजूँषि यस्मिन् प्रतिष्ठिता रथनाभाविवाराः
(3) हृत्प्रतिष्ठं यदजिरं जविष्ठं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।

24. 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' इति वार्तिकस्योदाहरणमस्ति–
(a) वाताय कपिला विद्युत। (b) विप्राय गां ददाति।
(c) मुक्तये हरिं भजति। (d) ब्राह्मणाय हितम् ।

Ans. (c) : 'तादर्थ्ये चतुर्थी वाच्या' इति वार्तिकस्य उदाहरणं मुक्तये हरिं भजति अस्ति। जिस प्रयोजन के लिए जो वस्तु या क्रिया होती है, उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे उपर्युक्त प्रश्न के उत्तर में- 'मुक्तये हरिं भजति' इसमें मुक्ति के लिए हरि की प्रार्थना कर रहा है अतः 'मुक्ति' में चतुर्थी विभक्ति हुई है।

25. 'छत्रोपानहम्' इति पदे समासोऽस्ति –
(a) अव्ययीभाव (b) द्वन्द्वः
(c) तत्पुरुषः (d) कर्मधारयः

Ans. (b) : 'छत्रोपानहम्' पदे 'द्वन्द्वः' समासोऽस्ति। छत्रोपाहनम् पद में द्वन्द्व समास है। द्वन्द्वाच्चुदषहान्तात्समाहारे (ल.सि.कौ. 5.4.106) चवर्गान्ताद्पहान्ताच्च द्वन्द्वाट्टच् स्यात्समाहारे, छत्रोपाहनम् का लौकिक विग्रह- 'छत्रं च उपानहौ च' होगा।

26. अधस्तनयुग्मानां समुचितां तालिकां योजयन् शुद्धं विकल्पं चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(A) भामहः	(1) रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्
(B) पं. जगन्नाथः	(2) शब्दार्थौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालङ्कारौ च काव्यम्।
(C) मम्मटः	(3) शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद् द्विधा।
(D) वाग्भटः	(4) तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	3	1	4	2
(b)	2	1	4	3
(c)	1	3	4	2
(d)	3	2	4	1

Ans. (a) : भामहः- शब्दार्थौ सहितौ काव्यं गद्यं पद्यं च तद् द्विधा। काव्यालङ्कार में भामह ने कहा है कि - शब्द और अर्थ मिलकर काव्य कहलाते हैं, काव्य के दो भेद होते हैं- गद्य और पद्य।
पं. जगन्नाथः- रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।
पण्डितराज जगन्नाथ विरचित 'रसगङ्गाधर' नामक ग्रन्थ में चार (4) आनन हैं।

रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द 'काव्य' हैं।
मम्मटः - तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि।
ऐसे शब्द और अर्थ जो दोषरहित हो, गुण (माधुर्य आदि) से युक्त हो वे काव्य कहलाते हैं,
वाग्भटः - शब्दार्थौ निर्दोषौ सगुणौ प्रायः सालङ्कारौ च काव्यम्।

27. रूपकभेदानामुदाहरणानि परस्परं सुमेलयन् शुद्धं विकल्पं चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(A) समवकारः	(1) सौगन्धिकाहरणम्
(B) व्यायोगः	(2) त्रिपुरदाहः
(C) प्रहसनम्	(3) समुद्रमन्थनम्
(D) डिमः	(4) कन्दर्पकेलिः

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	4	3	2	1
(b)	3	1	4	2
(c)	2	3	1	4
(d)	4	2	3	1

Ans. (b) : समवकारः- कार्य समवकारेऽपि आमुखं नाटकादिवत्।
ख्यातं देवासुरं वस्तु निर्विमर्शास्तु सन्धयः।।
समवकार में भी नाटक आदि के समान आमुख रखना चाहिए। समवकार में देव तथा असुरों की प्रसिद्ध कथा होती है। इसमें विमर्श को छोड़कर अन्य चार सन्धियाँ होती है। इसमें इतिहास प्रसिद्ध उदात्त प्रकृति के देव एवं दानव पात्र होते हैं, जिसकी संख्या 12 होती। जैसे- समुद्रमन्थन।
व्यायोगः- ख्यातेतिवृत्तो व्यायोगः ख्यातोद्धतनराश्रयः।
हीनो गर्भविमर्शाभ्यां दीप्ताः स्युर्डिमवद्रसाः।
व्यायोग की कथावस्तु प्रसिद्ध होती है। उसमें प्रख्यात तथा उद्धत नायक का आश्रय लिया जाता है। यह गर्भ एवं विमर्श सन्धि से रहित होता है। जैसे-सौगन्धिकाहरणम्
प्रहसनं-तद्वत्प्रहसन त्रेधा शुद्धवैकृतसङ्करैः।
भाण के समान प्रहसन होता है। वह शुद्ध वैकृत और सङ्कर के भेद से तीन प्रकार का होता है-कन्दर्पकेलि
डिम- डिमे वस्तु प्रसिद्धं स्याद् वृत्तयः कैशिकी विना।
नेतारो देवगन्धर्वयक्ष रक्षोमहोरगाः।।
डिम नामक रूपक में कथावस्तु प्रसिद्ध होती है। इसमें सात्त्वती, आरभटी और भारती वृत्ति होती है। इसमें 16 नायक होते हैं। जैसे- त्रिपुरदाह।

28. 'निर्जनः' इति पदे समासविग्रहः स्यातः –
(a) नास्ति जनः यत्र सः।
(b) निर्गताः जनाः यस्मात् सः।
(c) निष्क्रान्तैः जनैः यः सः।
(d) नष्टाः जनाः यत्र सः।

Ans. (b) : 'निर्जनः' इति पदे समासविग्रहः 'निर्गताः जनाः यस्मात् सः स्यातः। इसमें बहुव्रीहि समास है।
वार्तिक- प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोपः।
अर्थ- 'प्र' आदि से परे जो धातुज अर्थात् कृदन्त शब्द हो तो उनका समर्थ सुबन्त के साथ समास होता है और उत्तर पद का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे-
विधवा- विगतो धवो यस्याः सा।
निर्जनः- निर्गताः जनाः यस्मात् सः।
प्रपर्णः- प्रपतितः पर्णः यस्मात् सः।

29. मेघदूते वर्णितं मेघः सम्मिश्रणमस्ति –
(a) धूमज्योतिसलिलमरुताम् (b) धूमग्निभूवारिणाम्
(c) धूमानलवाष्पवारिणाम् (d) धूमज्योतिभूवारिणाम्

Ans. (a) : मेघदूते वर्णितं मेघः 'धूमज्योतिसलिलमरुताम्' सम्मिश्रणं अस्ति। मेघदूत में वर्णित मेघ धुआँ, ज्योति (प्रकाश) जल, और वायु का मिश्रण है। मेघदूत कालिदास की रचना है। सम्पूर्ण मेघदूतम् में मन्दाक्रान्ता छन्द है, इसमें 17 वर्ण होते हैं, इसमें 4, 6, 7 पर यति होती है।

धूमज्योतिः सलिलमरुतां सन्निपातः क्व मेघः
संदेशार्थाः क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीयाः।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन्गुह्यकस्तं ययाचे
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणाश्चेतनाचेतनेषु ।।5।।

'कहाँ तो, धुआँ, प्रकाश, जल और वायु-इनका सम्मिश्रण रूप मेघ और कहाँ सशक्त इन्द्रियों वाले प्राणियों द्वारा पहुँचाए जाने वाले सन्देश' इस बात को न विचारते हुए यक्ष ने उस (बादल) से प्रार्थना की, क्योंकि काम से पीड़ित लोग जड़ चेतन पदार्थों के प्रति स्वभावतः विवेकशून्य हो जाया करते हैं।

30. 'काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्वः
तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।
केचिद्वाचां स्थितमविषये तत्त्वमूचुस्तदीयं
तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।।
इत्यस्यां कारिकायां प्रतिपाद्यविषयान् यथाक्रमं संयोज्य शुद्धं विकल्पं चिनुत –
(i) भाक्तवादी
(ii) अशक्यवक्तव्यतावादी
(iii) अभाववादी
विकल्पाः–
(a) (iii), (i) एवं (ii) (b) (i), (ii) एवं (iii)
(c) (ii), (iii) एवं (i) (d) (iii), (ii) एवं (i)

Ans. (a) : इत्यस्यां कारिकायां प्रतिपाद्यविषयान् यथाक्रमं अभाववादी भाक्तवादी, अशक्यवक्तव्यतावादी अस्ति।
ध्वनि के सिद्धांत को अनेक प्रकार की युक्तियों के माध्यम से इस सिद्धान्त का विरोध हुआ है। उन युक्तियों को तीन मतों में विभाजित किया गया है। (1) अभाववादी (2) भाक्तवादी (3) अनिर्वचनीयतावादी इस मतों का समुचित खण्डन कर ध्वनि सिद्धांत को प्रतिष्ठित किया गया है। ध्वन्यालोक की प्रथम कारिका में इसका उल्लेख किया गया है-

काव्यस्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः समाम्नातपूर्व-
स्तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।
केचित् वाचां स्थितमविषये तत्त्वमूचुस्तदीयं
तेन ब्रूमः सहृदयमनः प्रीतये तत्स्वरूपम्।।

(1) अभाववादी मत- अभाववादी वे है, जो ध्वनि के अस्तित्व को स्वीकार्य नहीं करते हैं।
(2) भक्तिवादीः- यह मत ध्वनि का लक्षणा में अन्तर्भाव मानता है- ''अन्ये तं ध्वनिसंज्ञित काव्यात्मानं गुणवृत्तिरित्याह।'' इस मत के अनुसार ध्वनि या व्यञ्जना की जो भी विशेषताएँ है, वे सभी लक्षणा में पायी जाती है,
(3) अलक्षणीयतावादी- इस मत के अनुसार ध्वनि नामक काव्य का तत्व है, किन्तु वाणी द्वारा उसका लक्षण या व्याख्या नहीं की जा सकती है।

31. अधस्तनयुग्मानां समीचीनां तालिकां चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(A) ऋग्वेदः	(1) काण्वशतपथम्
(B) यजुर्वेदः	(2) ताण्ड्यमहाब्राह्मणम्
(C) सामवेदः	(3) गोपथब्राह्मणम्
(D) अथर्ववेदः	(4) कौषीतकि ब्राह्मणम्

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	2	1	3	4
(b)	4	1	2	3
(c)	3	2	4	1
(d)	1	3	2	4

Ans. (b) : ऋग्वेदः- वैदिक साहित्य का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। ऋग्वेद में विभिन्न देवों की स्तुति वाले मन्त्र हैं। ऋग्वेद के आचार्य पैल हैं जो व्यास के शिष्य हैं। ऋग्वेद से सम्बन्धित दो ब्राह्मण ग्रन्थ हैं– (1) ऐतरेय (2) कौषीतकि (शांखायन) ब्राह्मण

यजुर्वेद - शुक्लयजुर्वेद - शतपथ ब्राह्मण

कृष्ण यजुर्वेद- तैत्तिरीय ब्राह्मण

सामवेद के ब्राह्मण- ताण्ड्य (पञ्चविंश) षड्विंश, सामविधान आर्षेय, देवताध्याय, संहितोपनिषद्, वंश ब्राह्मण।

अथर्ववेद- गोपथ ब्राह्मण।

32. 'प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः' कस्य भवति?

(a) पुरुषस्य (b) गुणस्य
(c) प्रकृतेः (d) मनसः

Ans. (b) : प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः 'गुणस्य' भवति। दीपक के समान व्यवहार करने वाली वृत्ति गुण की होती है। सांख्य दर्शन के अनुसार गुण तीन होते हैं- सत्व, रजस् तथा तमस् । सत्व गुण को लघु और प्रकाशक माना गया है। रजोगुण को चल और उपष्टम्भक माना गया है तथा तमोगुण को गुरु और आवरण करने वाला माना गया है, एक ही प्रयोजन के लिए दीपक (तेल, बत्ती और आग) के समान (परस्पर विरोधी होते हुए भी मिलकर) क्रिया होती है।

सत्त्वं लघुप्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः ॥13॥

33. अधोलिखितसुभाषितानि सम्बन्धिग्रन्थैः सह सम्मेल्य शुद्धं विकल्पं चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(A) मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि	(1) उत्तररामचरितम्
(B) यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः	(2) मृच्छकटिकम्
(C) भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति	(3) रत्नावली
(D) आभाति मकरकेतोः पार्श्वस्था चापयष्टिरिव	(4) अभिज्ञानशाकुन्तलम्

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	2	3	4	1
(b)	4	1	2	3
(c)	3	4	1	2
(d)	1	2	3	4

Ans. (b) : अधोलिखित सुभाषितानि सम्बन्धित ग्रन्थैः सह सम्मेल्य शुद्धं विकल्पं अस्ति-

सूची-I	सूची-II
मम विरहजां न त्वं वत्से शुचं गणयिष्यसि	- अभिज्ञानशाकुन्तलम्
यथा स्त्रीणां तथा वाचां साधुत्वे दुर्जनो जनः	- उत्तररामचरितम्
भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति	- मृच्छकटिकम्
आभाति मकरकेतोः पार्श्वस्था चापयष्टिरिव	- रत्नावली

34. लोपसंज्ञा विधायकं सूत्रमस्ति –

(a) तस्य लोपः (b) हलन्त्यम्
(c) अदर्शनं लोपः (d) आदिरन्त्येन सहेता

Ans. (c) : लोपसंज्ञा विधायकं 'अदर्शनं लोपः' सूत्रमस्ति।
आदिरन्त्येन सहेता (1.1.71) - आदि वर्ण (अन्त्येन इता) अन्तिम इत् वर्ण (सह) के साथ मिलकर प्रत्याहार बनाता है जो आदि वर्ण एवं इत्संज्ञक अन्तिम वर्ण के पूर्व आए वर्णों का समष्टि रूप में बोध करता है। जैसे अच्- अ इ उ ऋ ऌ ए ऐ ओ औ हलन्त्यम् (1.3.3)- उपदेश में (अन्त्यम्) अन्तिम व्यञ्जन वर्ण इत् होते हैं। लेकिन विभक्ति में अन्तिम तकार (त्) सकार (स्) तथा मकार (म्) का लोप नहीं होता है- 'न विभक्तौ तुस्माः' इत् संज्ञा होने से इन वर्णों का लोप- तस्य लोपः (1.2.9) सूत्र से होता है। लोप का अर्थ है- अदर्शन- अदर्शनं लोपः। फलतः इत् संज्ञा वाले वर्ण विद्यमान रहते हुए भी दिखाई नहीं पड़ते हैं। अतः इनकी गणना भी नहीं की जाती है।

35. गीतानुसारं 'स्थितिप्रज्ञः' कीदृशो न भवतिः

(a) आत्मन्येवात्मनातुष्टः (b) सुखेषु विगतस्पृहः
(c) वीतरागभयक्रोधः (d) दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः

Ans. (a) : गीतानुसारं स्थितप्रज्ञः आत्मन्येवात्मनातुष्टः न भवति।
गीता के अनुसार स्थित प्रज्ञ को बताया गया है-

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुरुच्यते॥

'दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः'- दुःखो की सम्भावना और उसकी प्राप्ति होने पर भी जिसके मन में उद्वेग नहीं होता है अर्थात् कर्तव्य-कर्म करते समय कर्म करने में बाधा लग जाना, निन्दा अपमान होना, कर्म का प्रतिकूल होना आदि प्रतिकूलताएँ आने पर भी उसके मन में उद्वेग नहीं होता है।

'सुखेषु विगतस्पृहः - सुखों की सम्भावना और उसकी प्राप्ति होने पर भी जिसके भीतर स्पृहा नहीं होती है। अर्थात् वर्तमान में कर्मों का सांगोपांग हो जाना, तात्कालिक आदर और प्रशंसा होना, अनुकूल फल मिल जाना आदि अनुकूलताएँ आने पर भी उसके मन में 'यह परिस्थिति ऐसी ही बनी रहे; यह परिस्थिति सदा मिलती रहे- ऐसी स्पृहा नहीं होती है।

'वीतरागभयक्रोधः- संसार के पदार्थो का मन पर जो रंग चढ़ जाता है उसको राग कहते हैं। पदार्थों में राग होने पर अगर कोई सबल व्यक्ति उन पदार्थों का नाश करता है, उनसे सम्बन्ध-विच्छेद करता है, उसकी प्राप्ति में विघ्न डालता है, तो मन में 'भय' होता है।

36. यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत् किम्?

(a) कारणम् (b) समवायिकारणम्
(c) असमवायिकारणम् (d) न किमपि पूर्वोक्तेषु

Ans. (a) : 'यस्य कार्यात् पूर्वभावो नियतोऽनन्यथासिद्धश्च तत् कारणम्'। यहाँ कारण का लक्षण बताया गया है। कारण और कार्य परस्पर सापेक्ष है, कार्य को अस्तित्व में आने के लिए कारण की अपेक्षा होती है। कारण के अभाव में कार्य की उत्पत्ति सम्भव नहीं है। इसी प्रकार बिना कार्य को उत्पन्न किये कोई पदार्थ कारण नहीं कहलाता है। इसी परस्पर सापेक्षता से कार्य के प्रति नियत पूर्व भाव को कारण का लक्षण बताया गया है। पूर्वभाव का अर्थ है पहले से विद्यमान होना। नियत का अर्थ है- निश्चित, आवश्यक, अपवाद रहित कार्य की उत्पत्ति के पहले कारण का होना आवश्यक है। ऐसे पूर्वभाव का निराकरण करने के लिए अनन्यथासिद्ध शब्द रखा गया है। कारण का उदाहरण है- तन्तु वेमा आदि पट की उत्पत्ति के पूर्व तन्तु, वेमा, तुरी, तन्तुवाय और तन्तु संयोग का होना आवश्यक है। इनकी उपस्थिति का प्रयोजन पट का निर्माण ही है।

37. नचिकेतसः पिता कस्य यज्ञस्य आयोजनं कृतवान्?

(a) दशपूर्णमास यज्ञस्य (b) विश्वजित् यज्ञस्य
(c) राजसूय यज्ञस्य (d) सौत्रामणि यज्ञस्य

Ans. (b) : नचिकेतसः पिता 'विश्वजित् यज्ञस्य आयोजनं कृतवान्। नचिकेता के पिता ने 'विश्वजित्' यज्ञ किये। गौतम वंशीय महर्षि अरुण के पुत्र उद्दालक ऋषि ने फल की कामना से विश्वजित् नामक यज्ञ किया। यज्ञ में उद्दालक ने दुग्ध न देने वाली तथा प्रजनन शक्ति से हीन गायें दे रहे थे तो नचिकेता के मन में श्रद्धा बुद्धि उत्पन्न हुई और उसने पिता से पूछा- "आप मुझे किसको दान कर रहे हैं? कई बार पूछने पर पिता ने क्रुद्ध होकर कहा "तुझे मृत्यु को देता हूँ।" पिता की आज्ञा से नचिकेता ने मृत्यु के समीप जाना सहर्ष स्वीकार्य किया।

38. अधस्तनेषु युग्मं योजयन् विकल्पेषु समुचितमुत्तरं चिनुत–

	सूची-I		सूची-II
(a)	य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते	(1)	विष्णुसूक्तम्
(b)	यः पार्थिवानि विममे रजांसि	(2)	अग्निसूक्तम्
(c)	आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः	(3)	प्रजापतिसूक्तम्
(d)	राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्	(4)	विश्वेदेवासूक्तम्

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	3	1	4	2
(b)	3	4	1	2
(c)	2	4	3	1
(d)	3	4	2	1

Ans. (a) : अधस्तनेषु युग्मं योजयन् विकल्पेषु समुचितमुत्तर अस्ति।

सूची I		सूची- II
य आत्मदा बलदा यस्य विश्वं उपासते	-	प्रजापतिसूक्तम्
यः पार्थिवानि विममे रजांसि	-	विष्णु सूक्तम्
आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः	-	विश्वेदेवासूक्तम्
राजन्तमध्वराणां गोपामृतस्य दीदिविम्	-	अग्निसूक्तम्

39. 'यत् सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति' मृच्छकटिके केन कथितम्?

(a) माथुरेण (b) शकारेण
(c) सूत्रधारेण (d) चारुदत्तेन

Ans. (d) : 'यत् सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति' मृच्छकटिके चारुदत्तेन कथितम्। मृच्छकटिकम् नामक प्रकरण में चारुदत्त कहता है कि- धनहीनों से मिलने में उनके मित्र भी कतराने लगते हैं।

सूत्रधार- शून्यमपुत्रस्य गृहं, चिरशून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्। सूत्रधार कहता है कि - पुत्रहीन व्यक्ति का घर सूना होता है सच्चे मित्र के अभाव में सारा जीवन सूना होता है। यह सूक्ति चारुदत्त के विषय में कही गयी है।
मृच्छकटिक-शूद्रक की रचना है। यह 10 अङ्कों का प्रकरण ग्रन्थ है।

40. 'क्रोधाद्भवति' इति अस्ति –

(a) स्मृतिविभ्रमः (b) बुद्धिनाशः
(c) सम्मोहः (d) प्राणनाशः

Ans. (c) : 'क्रोधाद्भवति' इति सम्मोहः अस्ति।
अर्थात् क्रोध से सम्मोह उत्पन्न होता है। यह वाक्य वेदव्यास रचित भगवद्गीता से है इसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं।

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ 2.63॥

अतः विकल्प (c) सही है।

41. 'राधा पत्रं लेखिष्यति।' इति वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तने लेख्यं रूपं भवति –

(a) पत्रे राधा लेखिष्यति। (b) राधया पत्रं लेखिष्यते।
(c) पत्रेण राधया लिखिष्यते। (d) राधायाः पत्रं लेखिष्यते।

Ans. (b) : राधा पत्रं लेखिष्यति।' इति वाक्यस्य वाच्यपरिवर्तने 'राधया पत्रं लेखिष्यते' रूपं भवति।
अर्थात् 'राधा पत्रं लेखिष्यति।' इस वाक्य का वाच्यपरिवर्तन रूप 'राधया पत्रं लेखिष्यते' होगा।
वाच्य तीन प्रकार से परिवर्तित होता है-
(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य और (3) भाववाच्य। इस वाक्य में कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तन होने पर कर्ता तृतीया विभक्ति तथा कर्म प्रथमा विभक्ति में और क्रिया कर्मानुसार आत्मनेपदी में परिवर्तित होती है। अतः विकल्प (b) सही है।

42. 'दृष्टे साऽपार्था' इत्यत्र 'सा' पदस्य कोऽर्थः स्यात्?

(a) जिज्ञासा (b) दुःखम्
(c) व्यर्थम् (d) प्रत्यक्षम्

Ans. (a) : 'दृष्टे साऽपार्था' इत्यत्र 'सा' पदस्य 'जिज्ञासा' अर्थः स्यात्।
अर्थात् 'दृष्टे (प्रत्यक्ष उपाय होने पर) सा (वह जिज्ञासा) अपार्था (निरर्थक है)' इसमें 'सा' पद का 'जिज्ञासा' अर्थ होगा। साङ्ख्यकारिका में तीन प्रकार के दुःख (1) आध्यात्मिक (2) आधिभौतिक, और (3) आधिदैविक बताये गये हैं इन दुःखत्रयाभिघात से उत्पन्न दुःख निवारणार्थ हेतुओं की जिज्ञासा सभी (प्राणी मनुष्य) को होती है लेकिन दृष्ट (प्रत्यक्ष) उपायों के होने पर भी वह (जिज्ञासा) व्यर्थ होती है तो ऐसा नहीं है क्योंकि दृष्ट उपायों से दुःखों का ऐकान्तिक और आत्यन्तिक अभाव नहीं हो सकता है। अतः विकल्प (a) सही है।

43. 'भू' धातोः आशीर्लिङ् लकारस्य प्रथमपुरुष-एकवचने रूपमस्ति –

(a) भूयास्म (b) भूयासुः
(c) भूयास्त (d) भूयात्

Ans. (d) : 'भू' धातोः आशीर्लिङ् लकारस्य प्रथमपुरुष-एकवचने रूपं 'भूयात्' अस्ति।
अर्थात् 'भू' धातु का आशीर्लिङ् (आशीर्वाद के अर्थ में) लकार का प्रथम पुरुष एकवचन में रूप 'भूयात्' है।

भू-धातु आशीर्लिङ् (आशीर्वाद के अर्थ में)

	एक व.	द्वि. व.	बहु व.
प्र.पु.	भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
म.पु.	भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
उ.प्र.	भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

अतः विकल्प (d) सही है।

44. अधोविन्यस्तयुग्मानां परस्परं सुमेलनं कृत्वा शुद्धं विकल्पं चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(a) हरये रोचते भक्तिः।	(1) वारणार्थानामीप्सितः
(b) अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः।	(2) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(c) अभिनिविशते सन्मार्गम्	(3) अपवर्गे तृतीया
(d) यवेभ्यो गां वारयति।	(4) अभिनिविशश्च

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	2	3	4	1
(b)	2	3	1	4
(c)	4	1	3	2
(d)	3	2	4	1

Ans. (a) : अधोविन्यस्तयुग्मानां परस्परं सुमेलन कृत्वा शुद्धं विकल्पकं (a) अस्ति।
अर्थात् अधोविन्यस्तयुग्मों का परस्पर सुमेलित करने पर शुद्ध विकल्प (a) बनता है।
(a) हरये रोचते भक्तिः – रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(b) अह्ना क्रोशेन वा अनुवाकोऽधीतः – अपवर्गे तृतीया
(c) अभिनिविशते सन्मार्गम् – अभिनिविशश्च
(d) यवेभ्यो गां वारयति – वारणार्थानामीप्सितः।

45. साहित्यिकदृष्ट्या सर्वाधिक समृद्धभाषापरिवारोऽस्ति –
(a) द्राविड परिवारः (b) अमरीकी परिवारः
(c) भारोपीय परिवारः (d) काकेशी परिवारः

Ans. (c) : साहित्यिक दृष्ट्या सर्वाधिकः समृद्धभाषापरिवारो भारोपीय परिवारः अस्ति।
अर्थात् साहित्यिक दृष्टि से सर्वाधिक समृद्ध भाषा परिवार भारोपीय परिवार है। विश्वभाषा परिवार (1) आकृतिमूलक और (2) मूलक भेद से दो प्रकार का होता है। यह पारिवारिक मूलक भाषा परिवार चार खण्डों और अट्ठारह परिवारों में विभक्त है, यूरेशिया खण्ड का भारोपीय परिवार दस भाषा परिवार में (1) भारत-इरानी (2) बाल्टो-स्लाविक (3) आर्मीनी (4) अल्बानी (इलीरी) (5) ग्रीक (हेलेनिक) (6) केल्टिक (7) जर्मानिक (ट्यूटानिक) (8) इटालिक (9) हिटाइट (हित्ती) (10) तोखारी हैं। अतः विकल्प (c) सही है शेष अन्य विकल्प द्राविडपरिवार, काकेशी परिवार यूरेशिया खण्ड में तथा अमरीकी परिवार अमेरिका खण्ड में उल्लिखित है।

46. 'क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।' इत्यस्मिन् 'चारचक्षुषः' पदे समासोऽस्ति –
(a) द्विगुः (b) बहुव्रीहिः
(c) अव्ययीभावः (d) तत्पुरुषः

Ans. (b) : 'क्रियासु युक्तैर्नृप! चारचक्षुषो न वञ्चनीयाः प्रभवोऽनुजीविभिः।' इत्यस्मिन् 'चारचक्षुषः' पदे बहुव्रीहिः समासोऽस्ति।
अर्थात् क्रियासु................। इसमें 'चारचक्षुषः' पद में बहुव्रीहि समास है। लौकिक विग्रह-चत्वारि चक्षुषाणि यस्य सः अर्थात् चार नेत्र हैं जिसके वह (चारचक्षुषः)। यह राजा का विशेषण है।
अतः विकल्प (b) सही है।
समासः पञ्चधा।
(1) केवल समास- विशेष संज्ञा विनिर्मुक्तः केवल समासः प्रथमः।
(2) अव्ययीभाव- प्रायेण पूर्वपदार्थप्रधानः अव्ययीभावः।
(3) तत्पुरुष समास-प्रायेणोत्तरपदार्थप्रधानः तत्पुरुषः।
(4) बहुव्रीहि- प्रायेणान्यपदार्थप्रधानो बहुव्रीहिः।
(5) द्वन्द्व - प्रायेणउभयपदार्थप्रधानो द्वन्द्वः।।

47. अधोलिखितेषु आर्यभाषापरिवारे न स्वीक्रियते –
(a) प्राकृतम् (b) तमिलभाषा
(c) संस्कृतम् (d) पालि

Ans. (b) : आर्यभाषापरिवारे तमिलभाषा न स्वीक्रियते।
अर्थात् आर्य भाषा परिवार में तमिल भाषा नहीं स्वीकार की गयी है। यह भाषा यूरेशिया खण्ड के द्राविड़ भाषा परिवार की भाषा है तथा शेष अन्य संस्कृत, प्राकृत और पालि में आर्यभाषापरिवार की भाषाएँ हैं। इसे ही भारोपीय परिवार के नाम से जाना जाता है। इसको शतम् और केन्टुम् भेद से विभाजित किया गया है, अतः संस्कृत, अवेस्ता आदि शतम् वर्ग की भाषा है।

48. 'निरुक्तमिति' वेदाङ्गस्य सम्बन्धोऽस्ति –
(a) ज्योतिष् शास्त्रेण (b) मन्त्रोच्चारणेन
(c) पदनिर्वचनेन (d) वैदिकयज्ञेन

Ans. (c) : 'निरुक्तमिति' वेदाङ्गस्य पदनिर्वचनेन सम्बन्धोऽस्ति।
अर्थात् निरुक्त वेदाङ्ग का 'पद निर्वचन से' सम्बन्ध है। यास्ककृत निरुक्त नामक ग्रन्थ निघण्टु (वैदिक शब्द कोश) का निर्वचन करता है। इसमें तीन काण्ड हैं–
(1) नैघण्टुक काण्ड- (1 से 3 अध्याय तक)
(2) नैगमकाण्ड (एकपदिककाण्ड)- (4 से 6 अध्याय तक)
(3) दैवतकाण्ड - (7 से 12 अध्याय तक)
निरुक्त में कुल तीन काण्ड तथा 12 अध्याय हैं इसमें 2 अध्याय परिशिष्ट रूप में है अतः कुल 14 अध्याय हैं।
निरुक्त को पाणिनीय शिक्षा में श्रोत (कान) कहा गया है–
निरुक्तं श्रोतमुच्यते।

49. 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' इति कथनम् अस्ति–
(a) सूत्रधारस्य (b) माधव्यस्य
(c) शार्ङ्गरवस्य (d) गौतम्याः

Ans. (c) : 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' इति कथनं शार्ङ्गरवस्य अस्ति।
अर्थात् 'न खलु धीमतां कश्चिदविषयो नाम' यह कथन शार्ङ्गरव का है। यह उक्ति कालिदास रचित 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्'' नाटक में शार्ङ्गरव द्वारा कथित महर्षि कण्व के विषय में है। इसका अर्थ है- निश्चित रूप में बुद्धिमान के लिए कोई वस्तु अज्ञात नहीं है।
अतः प्रश्नानुसार विकल्प (c) सही है।
(1) सूत्रधार- रंगमञ्च की व्यवस्था करने वाला प्रधान नट।
(2) माधव्य- विदूषक है।
(3) गौतमी- महर्षि कण्व के आश्रम की अध्यक्षा।

50. सांख्यमतेऽधस्तनेषु प्रमाणं नास्ति –
(a) प्रत्यक्षम् (b) अनुमानम्
(c) उपमानम् (d) शब्दप्रमाणम्

Ans. (c) : साङ्ख्यमतेऽधस्तनेषु प्रमाणं 'उपमानम्' नास्ति अर्थात् सांख्यमत में अधोलिखित प्रमाणों में उपमान प्रमाण नहीं है। साङ्ख्य एक प्रमेय दर्शन है यह तीन प्रमाण (1) प्रत्यक्ष (दृष्ट) (2) अनुमान और (3) आप्तवचन (शब्द या आगम) स्वीकार करता है अन्य प्रमाणों का इसी में अन्तर्भाव कर लेता है।
दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणसिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धिः॥4॥
अतः विकल्प (c) सही है।

51. कठोपनिषदि नचिकेतसा याचितवरदानानि यथाक्रमं संयोज्य शुद्धं विकल्पं चिनुत –
(i) अग्निविद्या
(ii) आत्मतत्त्वज्ञान
(iii) पितृपरितोष
विकल्पा :–

(a) (iii), (i) एवं (ii) (b) (i), (ii) एवं (iii)
(c) (ii), (iii) एवं (i) (d) (iii), (ii) एवं (i)

Ans. (a) : कठोपनिषदि नचिकेतसा याचितवरदानानि यथाक्रमं संयोज्य शुद्धं विकल्प (a) (III), (I) एवं (II) अस्ति।
अर्थात् कठोपनिषद् में नचिकेता द्वारा मागें गये वरदान क्रम से जुड़कर शुद्ध विकल्प (a) है।
क्रम- पितृपरितोष- अग्निविद्या- आत्मतत्त्वज्ञान।
यह उपनिषद् कृष्णयजुर्वेद के कठ शाखा से अवतरित है, इसमें दो अध्याय तथा प्रत्येक अध्याय में तीन वल्ली के क्रम से कुल छः वल्ली हैं। अतः विकल्प (a) सही है।

52. 'तौ नगरं पश्यतः।' इत्यस्य वाक्यस्य कर्मवाच्यो भविष्यति –
(a) ताभ्यां नगरं दृश्यन्ते। (b) ताभ्यां नगरं दृश्यते।
(c) ताभ्यां नगराणि दृश्यन्ते। (d) तौ नगरं दृश्यन्ते।

Ans. (b) : 'तौ नगरं पश्यतः।' इत्यस्य वाक्यस्य कर्मवाच्यो 'ताभ्यां नगरं दृश्यते।- भविष्यति।
अर्थात् 'तौ नगरं पश्यतः।' इस वाक्य का कर्मवाच्य में 'ताभ्यां नगरं दृश्यते' होगा। कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य में परिवर्तित करने पर कर्ता में तृतीया विभक्ति तथा कर्म में प्रथमा विभक्ति और क्रिया कर्मानुसार आत्मनेपदी में परिवर्तित होगी।

53. 'अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि स इद्देवेषु गच्छति।' अस्य मन्त्रस्य ऋषिर्वर्तते –
(a) मधुच्छन्दा (b) कण्वः
(c) सोमः (d) वरुणः

Ans. (a) : 'अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि स इद्देवेषु गच्छति।' अस्य मन्त्रस्य ऋषिः 'मधुच्छन्दा' अस्ति। अर्थात् इस मन्त्र के ऋषि 'मधुच्छन्दा' हैं। यह मन्त्र ऋग्वेद के अग्नि सूक्त से अवतरित है इसका देवता अग्नि, ऋषि-मधुच्छन्दा (विश्वामित्र) तथा छन्द-गायत्री और श्वर-षड्ज है।
मन्त्र-अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद्देवेषु गच्छति ।।1।1।4।।
गायत्री मन्त्र में 3 पाद, 24 वर्ण होते हैं। 3×8=24
अतः विकल्प (a) सही है।

54. अधस्तनेषु वाक्येषु सत्यं विकल्पं चिनुत –
(1) 'होता' इति अग्नेः विशेषणम्।
(2) 'मध्व उत्सः' इति विष्णोः पदे विद्यते।
(3) 'वृद्धश्रवाः' इति विश्वेदेवासूक्ते विद्यते।
विकल्पाः –
(a) (1), (2) एवं (3) असत्यमस्ति
(b) (1) एवं (2) सत्यम् एवं (3) असत्यम्
(c) (2) एवं (3) सत्यम् एवं (1) असत्यम्
(d) (1), (2) एवं (3) समीचीनानि सन्ति

Ans. (d) : अधस्तनेषु वाक्येषु सत्यं विकल्पं 'D' अस्ति।
इसप्रकार 'होता' अग्नि का विशेषण, मध्व उत्सः विष्णु पद के लिए है, तथा 'वृद्धश्रवाः' विश्वेदेवासूक्त में है। अतः तीनों विकल्प समीचीन है।
मन्त्र- अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्।
होतारं रत्नधातमम् 1/1/1 अग्नि सूक्त
तदस्य प्रियमभि पाथो अश्यां नरो यत्र गावो देवयवो मदन्ति।
उरु क्रमस्य स हि बन्धुरित्था विष्णोः पदे परमे मध्व उत्सः।।5।।
विष्णुसूक्त 1/154 सूक्त

55. अधोलिखितं सूचीद्वयं सुमेलयन् शुद्धं विकल्पं चिनुत–

सूची-I	सूची-II
(a) बीजम्	(1) रहस्यं कथ्यतेऽन्यस्य परावृत्त्य.......।
(b) नियताप्तिः	(2) सामान्यगुणयुक्तस्तु........ द्विजादिकः।
(c) अपवारितम्	(3) स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्धेतुः .... विस्तार्यनेकधा।
(d) धीरप्रशान्तः	(4) अपायाभावतः प्राप्तिः .... सुनिश्चिता।

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	4	1	2	3
(b)	4	2	3	4
(c)	2	3	4	1
(d)	3	4	1	2

Ans. (d) : अधोलिखित सूचीद्वयं सुमेलयन् शुद्ध विकल्पं (d) अस्ति।
अर्थात् अधोलिखित सुमेलित दो सूची का शुद्ध विकल्प (d) है।
(a) बीजम् - स्वल्पोद्दिष्टस्तु तद्धेतु........विस्तार्यनेकधा।
(b) नियताप्तिः - अपायाभावतः प्राप्ति..........सुनिश्चिता।
(c) अपवारितम् - रहस्यं कथ्यतेऽन्यस्य परावृत्त्य......।
(d) धीरप्रशान्तः - सामान्यगुणयुक्तस्तु........द्विजादिकः।
अतः विकल्प (d) सही है।

56. हितोपदेशे 'व्याघ्रगर्दभकथा' विद्यते –
(a) सुहृद्भेदे (b) सन्धौ
(c) मित्रलाभे (d) विग्रहे

Ans. (d) : हितोपदेशे 'व्याघ्रगर्दभकथा 'विग्रहे' विद्यते।
अर्थात् हितोपदेश में 'बाघ और गधे की कथा है यह तृतीय खण्ड 'विग्रह' में है। इसमें धोबी दुर्बल गधे को चीता की खाल पहना कर खेतों में छोड़ता है।
हितोपदेश नारायण पण्डित का उपदेशात्मक ग्रन्थ है यह पाँच भागों में विभक्त है-
(1) प्रस्ताविका- राजासुदर्शन के मूर्ख पुत्र
(2) मित्रलाभ - काक, कूर्म, मृग, चूहे की कथा
(3) सुहृदभेद - शेर और बैल की मैत्री तुड़वाना
(4) विग्रह- हंसों और मोरों में युद्ध
(5) सन्धि- हंस और मोर राजाओं में सन्धि।

57. 'नैरात्म्यवादः' सिद्धान्तोऽस्ति –
(a) जैनदर्शनस्य (b) वेदान्तदर्शनस्य
(c) चार्वाकदर्शनस्य (d) बौद्धदर्शनस्य

Ans. (d) : 'नैरात्म्यवादः' सिद्धान्तो बौद्धदर्शनस्य अस्ति। अर्थात् नैरात्म्यवाद सिद्धान्त बौद्धदर्शन का है। कर्मवाद तथा पुनर्जन्म में विश्वास करते हुए भी बुद्ध आत्मा की सत्ता और अमरता में विश्वास नहीं करते थे। उनके अनुसार मनुष्य के शरीर में ऐसा कोई तत्व नहीं है जो शरीर के नष्ट हो जाने के बाद भी अक्षुण्ण बना रहे। बुद्ध के इसी मत को 'नैरात्म्यवाद' कहा गया है। मज्झिमनिकाय, चूलमालुंक्य सुत्त को नैरात्म्यवाद की धार्मिक पृष्ठभूमि कहा है। इसके अतिरिक्त शाश्वतवाद और उच्छेदवाद तथा प्रतीत्यसमुत्पाद बौद्ध धर्म से सम्बन्धित है। नोट- आस्तिक दर्शन आत्मवादी है।

58. 'प्रवीणः' इति पदं कयोः उदाहरणं वर्तते –
(i) अर्थसंकोचस्य (ii) अर्थपरिवर्तनस्य
(iii) अर्थविस्तारस्य (iv) अर्थहानेः
विकल्पं चिनुत –
(a) (i) एवं (ii) (b) (i) एवं (iii)
(c) (iii) एवं (iv) (d) (ii) एवं (iii)

Ans. (d) : प्रवीणः इति पदं अर्थपरिवर्तनयोः अर्थविस्तारयोः द्वयोः उदाहरणं वर्तते।
अर्थात् 'प्रवीण' यह पद अर्थपरिवर्तन और अर्थविस्तार का उदाहरण है। परिवर्तनशील संसार में सभी वस्तुओं और भाषाओं में परिवर्तन होने से प्रवीण पद में अर्थ परिवर्तन की दिशा तय हुई है यह परिवर्तन तीन रूपों-अर्थविस्तार, अर्थसंकोच तथा अर्थादेश में देखा जाता है। अतः प्रवीण शब्द प्रकृष्टो वीणायाम् अर्थात् वीणावादन में निपुण यह अर्थ छोड़कर दक्ष (चतुर) अर्थ में प्रयुक्त होकर कृषिकर्म में निपुण, कला में प्रवीण (निपुण) यह अर्थ देने लगा। अतः प्रवीण में अर्थपरिवर्तन का अर्थविस्तार हुआ है।
नोट- अर्थादेश के दो भेद (1) अर्थापकर्ष (2) अर्थोत्कर्ष हैं।

59. उत्तररामचरिते वर्णिते द्वितीयाङ्के विष्कम्भक समाप्त्यनन्तरं रङ्गमंचे कः प्रविशति?
(a) सीता (b) रामभद्रो
(c) तमसा (d) शम्बूकः

Ans. (b) : उत्तररामचरिते वर्णिते द्वितीयाङ्के विष्कम्भक समाप्त्यनन्तरं रङ्गमंचे रामभद्रो प्रविशति।
अर्थात् उत्तररामचरित में वर्णित द्वितीय अङ्क में विष्कम्भक समाप्ति के बाद रङ्गमंच पर रामभद्र प्रवेश करते हैं। यह भवभूति का प्रथम नाटक है, इसमें सात अङ्क हैं तथा सातवें अङ्क में गर्भांक (गर्भनाटक) का विधान है। इनके सभी नाटकों में विदूषक का अभाव है। अतः विकल्प (b) सही है।

60. नैयायिकमते साक्षात्कारिप्रमाकरणमस्ति –
(a) अनुमानम् (b) परामर्शः
(c) लिङ्गम् (d) प्रत्यक्षम्

Ans. (d) : नैयायिकमते साक्षात्कारि प्रमाकरणं 'प्रत्यक्षम्' अस्ति। नैयायिकों के मत में साक्षात्कारिणी प्रमा के करण को प्रत्यक्ष प्रमाण कहते हैं। साक्षात्कारिणी प्रमा दो प्रकार की होती है- (1) सविकल्पक (2) निर्विकल्पक। इस प्रमा के तीन प्रकार के करण होते हैं- (1) इन्द्रिय, (2) इन्द्रियार्थसन्निकर्ष तथा (3) ज्ञान। अतः विकल्प (d) सही है तथा शेष विकल्पों के लक्षण इस प्रकार हैं-
(1) अनुमान - लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम् ।
(2) लिङ्ग - व्याप्तिबलेनार्थगमकं लिङ्गम् ।
(3) परामर्श- तस्य तृतीयं ज्ञानं परामर्शः ।

61. ग्रामीणपदे कः प्रत्ययः?
(a) खश् (b) ठक्
(c) ठञ् (d) खञ्

Ans. (d) : ग्रामीणपदे 'खञ्' प्रत्ययः। ग्रामीण पद में खञ् प्रत्यय है। 'ग्रामाद्यखञौ' (लघुसिद्धान्तकौमुदी-4।2।93) सूत्र से ग्राम शब्द में खञ् प्रत्यय हुआ। ञ् की इत्संज्ञा और लोप होकर ख शेष रहा तब - 'आयनेयीनीयियः फढखछघां प्रत्ययाऽदीनाम्' (ल.कौ. 7।1।2) सूत्र से ख को ईन् आदेश और न को ण होकर ग्रामीण शब्द बना।

62. अधोलिखितानि सुभाषितानि सम्बन्धित ग्रन्थेभ्यः सुमेलयन् शुद्धविकल्पं चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(a) समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः	(1) बृहदारण्यकोपनिषद्
(b) सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म	(2) ऋग्वेदः
(c) संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्	(3) शुक्ल यजुर्वेदः
(d) आत्मा वाऽऽरे दृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः	(4) तैत्तिरीयोपनिषद्

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	2	3	4	1
(b)	3	2	1	4
(c)	3	4	2	1
(d)	4	1	3	2

Ans. (c) : समानी वः आकूतिः समाना हृदयानि वः –शुक्ल यजुर्वेद
सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म – तैत्तिरीयोपनिषद्
संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् - ऋग्वेदः
आत्मा वाऽऽरे दृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यः– बृहदारण्यकोपनिषद्

63. 'पुष्पेभ्यः स्पृहयति' इत्यत्र सम्प्रदानसंज्ञाविधायकं सूत्रमस्ति –
(a) चतुर्थी सम्प्रदाने (b) रुच्यर्थानां प्रीयमाणः
(c) स्पृहेरीप्सितः (d) क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्म

Ans. (c) : पुष्पेभ्यः स्पृहयति इत्यत्र सम्प्रदानसंज्ञा विधायकं सूत्रं 'स्पृहेरीप्सितः' अस्ति। फूलों को चाहता है, इस वाक्य में सम्प्रदानसंज्ञा विधायक सूत्र स्पृहेरीप्सितः है।
चतुर्थी सम्प्रदाने – सम्प्रदान कारक की चतुर्थी विभक्ति होती है।
रुच्यर्थानां प्रीयमाणः– रुचि या प्रीयमाण अर्थ वाली धातु के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है।
स्पृहेरीप्सितः– स्पृह् (चाहना) के अर्थ में सम्प्रदान संज्ञा होती है।
क्रुधद्रुहोरुपसृष्टयोः कर्मः– यदि क्रुध् (क्रोध करना) और द्रुह् (द्रोह करना) उपसर्ग के साथ आवे तो वहाँ कर्म संज्ञा होती है।

64. 'तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्' इति वचनं कं प्रति केन कथितम्?
(a) अर्जुनेन कृष्णं प्रति (b) भीमेन अर्जुनं प्रति
(c) कृष्णेन अर्जुनं प्रति (d) भीष्मेन कृष्णं प्रति

Ans. (c) : 'तस्माद्योगाय युज्यस्व योगः कर्मसु कौशलम्' इति वचनं 'कृष्णेन अर्जुनं प्रति' कथितम्। यह सूक्ति भगवद्गीता से उद्धृत है, जो महाभारत के भीष्म पर्व से सम्बन्धित है। यह प्रस्थानत्रयी के अन्तर्गत परिगणित है। प्रस्थानत्रयी के ग्रंथ- उपनिषद्, भगवद्गीता और ब्रह्मसूत्र हैं।

65. रघुवंशमहाकाव्ये वर्णितं देवदारुः केन पुत्रीकृतः?
(a) पार्वत्या (b) इन्द्रेण
(c) दिलीपेन (d) वृषभध्वजेन

Ans. (d) : रघुवंशमहाकाव्ये वर्णित देवदारुः 'वृषभध्वजेन' पुत्रीकृतः। रघुवंशमहाकाव्य में वर्णित देवदारु वृक्ष वृषभध्वज (भगवान् शिव) का पुत्र है। महाकवि कालिदास प्रणीत रघुवंश महाकाव्य है। जिसमें 19 सर्ग हैं, इसमें सूर्य वंश के राजा दिलीप से लेकर अग्निवर्ण तक के 31 राजाओं का वर्णन है।

66. व्याप्तिबलेनार्थगमकं किम् अस्ति?
(a) परामर्शः (b) प्रमाणम्
(c) लिङ्गम् (d) जातिः

Ans. (c) : व्याप्तिबलेनार्थगमकं 'लिङ्गम्' अस्ति। व्याप्ति के बल से अर्थ का बोध कराने वाला लिङ्ग है।
लिङ्गपरामर्शोऽनुमानम् - लिङ्ग (हेतु) का परामर्श अनुमान है।
व्याप्ति बलेनार्थगमकं लिङ्गं साहचर्यनियमो व्याप्तिः–
व्याप्ति के बल से जो (अज्ञात) अर्थ का ज्ञान कराता है, वह लिङ्ग है। जैसे-धूम अग्नि का लिङ्ग है क्योंकि जहाँ-जहाँ धूम होता है, वहाँ वहाँ अग्नि होती है, यह साहचर्य नियम व्याप्ति है।

67. **अधोलिखितेषु युग्मेषु विषममस्ति –**

(a) स्थूलशरीरम्	(1) आनन्दमयकोशः
(b) विज्ञानमयकोशः	(2) बुद्धिः ज्ञानेन्द्रियाणि च
(c) मनोमयकोशः	(3) मनः ज्ञानेन्द्रियाणि च
(d) प्राणमयकोशः	(4) वायुः कर्मेन्द्रियाणि च

Ans. (a) : अधोलिखितेषु युग्मेषु 'स्थूलशरीरं आनन्दमयकोशः विषमम्- अस्ति।
अर्थात् अधोलिखित युग्मों में 'स्थूलशरीरम् आनन्दमयकोशः' विषम है। तथा शेष अन्य विकल्प सम (सही) हैं जैसे-
(1) बुद्धिर्ज्ञानेन्द्रियैः सहितं विज्ञानमयकोशो भवति।
(2) मनस्तु ज्ञानेन्द्रियैः सहितं मनोमयकोशो भवति।
(3) प्राणादि पञ्चकं कर्मेन्द्रियैः सहितं प्राणमयकोशो भवति।
ये तीनों कोश ज्ञानशक्तिमान् कर्तारूप, इच्छाशक्तिमान् करण रूप तथा क्रियाशक्तिमान् होने से कार्यरूप क्रमशः विज्ञानमयकोश, मनोमयकोश तथा प्राणमय कोश होते हैं। अतः विकल्प (a) सही है।

68. **'जगतः कर्त्ता' इत्यत्र 'जगतः' पदे सूत्र निर्देशः करणीयः–**

(a) भुवः प्रभवश्च (b) कृत्यानां कर्तरि वा
(c) षष्ठी (d) कर्तृकर्मणोः कृति

Ans. (d) : जगतःकर्त्ता इत्यत्र 'जगतः' पदे कर्तृकर्मणोः कृति'
कर्तृकर्मणोः कृति (सिद्धान्त कौमुदी 2।3।65) - कृद्योगे कर्तरि कर्मणि च षष्ठी स्यात्। कृष्णस्य कृतिः। जगतः कर्ता कृष्णः। गुणकर्मणि वेष्यते (वा)। नेताऽश्वस्य स्रुघ्नस्य स्रुघ्नं वा। कृति किम्? तद्धिते माभूत्। कृतपूर्वी कटम्।

69. **अधोलिखितानां कथनानां सत्यासत्यपर्यायं चिनुत –**
(1) ज्ञानं करणम् – यदा निर्विकल्पकरूपा प्रमा फलम्।
(2) इन्द्रियार्थसन्निकर्षः करणम् – निर्विकल्पकरूपा प्रमा फलम्।

(a) (1) सत्यमस्ति
(b) (2) सत्यमस्ति
(c) (1) एवं (2) सत्यमस्ति
(d) (1) एवं (2) असत्यमस्ति

Ans. (d) : साक्षात्कारि प्रमाकरणं प्रत्यक्षम्। साक्षात्कारिणी च प्रमा सैवोच्यते या इन्द्रियजा सा च द्विधा सविकल्पक निर्विकल्पक भेदात्। तस्याः करणं त्रिविधम्। इन्द्रियम्, कदाचिद् इन्द्रियार्थसन्निकर्षः, कदाचिद् ज्ञानम्।

करण	अवान्तर व्यापार	ज्ञान (फल)
इन्द्रिय	इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष	निर्विकल्पक
इन्द्रियार्थसन्निकर्ष	निर्विकल्पक	सविकल्पक
निर्विकल्पक ज्ञान	सविकल्पक ज्ञान	हान (त्याग)- उपादान (ग्रहण) + उपेक्षा बिन्दु

अतः प्रश्न में दिए गए विकल्प का उत्तर 1 एवं 2 असत्यमस्ति होगा।

70. **'अद्' धातोः लोट् लकारे उत्तमपुरुषबहुवचनरूपं भवति–**

(a) अदाम (b) अद्माम
(c) अद्मानि (d) अद्मि

Ans. (a) : अद् धातोः लोट् लकारे उत्तम पुरुषबहुवचनरूपं 'अदाम' भवति। अद्धातु के लोट् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप अदाम होगा।

अद् (खाना) अदादिगण
लोट् लकार (आज्ञार्थक)

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्र.पु.	अत्तु/अत्तात्	अत्ताम्	अदन्तु
म.पु.	अद्धि/अत्तात्	अत्तम्	अत्त
उ.प्र.	अदानि	अदाव	अदाम

71. **'नयवादो' विचारयुतः सिद्धान्तोऽस्ति –**

(a) चार्वाकदर्शनस्य (b) जैनदर्शनस्य
(c) सांख्यदर्शनस्य (d) बौद्धदर्शनस्य

Ans. (b) : नयवादो विचारयुतः सिद्धान्तः 'जैनदर्शनस्य' अस्ति।
नयवाद जैनदर्शन का सिद्धान्त है। जैन दर्शन की मान्यता है कि प्रत्येक प्रमेय विषय (पदार्थ) का ज्ञान प्रमाण और नय के द्वारा किया जाता है। नय के द्वारा अनन्तधर्मी वस्तु के एक धर्म का एक अंश का ज्ञान होता है। यह नय दो प्रकार का होता है- 1. द्रव्यनय और 2. पर्यायनय। द्रव्यनय के भी तीन भेद हैं- नैगमनय, संग्रहनय और व्यवहारनय। पर्यायनय के चार भेद हैं- ऋजुसूत्रनय, शब्दनय, समभिरुनय और एवंभूतनय।

72. **'वोतो गुणवचनात्' इति सूत्रस्योदाहरणमस्ति –**

(a) बहवी (b) शकटी
(c) मृद्वी (d) भवानी

Ans. (c) : वोतो गुणवचनात् 'इति सूत्रस्योदाहरणं 'मृद्वी' अस्ति।
वा उतो गुणवचनात् (काशिकावृत्ति 4.1.44)
गुणम् उक्तवान् गुणवचनः। गुणवचनात् प्रातिपदिकादुकारान्तात् स्त्रियां वा ङीष् प्रत्ययो भवति। पट्वी, पटुः। मृद्वी, मृदुः। उतः इति किम्? शुचिरियं ब्राह्मणी। गुणवचनातीति किम्? आखुः।
वसुशब्दाद् गुणवचनाद् ङीबाद्युदात्तार्थम्। वस्वी। खरुसंयोगोपधात् प्रतिषेधो वक्तव्यः। खरुरियं ब्राह्मणी। पाण्डुरियं ब्राह्मणी। सत्त्वे निविशतेऽपैति पृथक् जातिषु दृश्यते। आधेयश्च अक्रियाजश्च सोडत्त्वप्रकृतिर्गुणः। उकारान्त गुणवाचक शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ङीष् प्रत्यय हो विकल्प से- मृद्वी, मृदुः (कोमला)। यहाँ उकारान्त गुणवाचक मृदु शब्द से प्रकृत सूत्र से ङीष् प्रत्यय हुआ, उकार को यण् होकर 'मृद्वी' रूप बना विकल्पाभाव में 'मृदुः' ही रहा।

73. **'अश्वपत्यादिभ्यश्च' इति सूत्रेण निष्पन्नं पदम् –**

(a) आदित्यः (b) दैत्यः
(c) आश्वपतम् (d) औपगदः

Ans. (c) : अश्वपत्यादिभ्यश्च इति सूत्रेण निष्पन्नं आश्वपतम्' पदम्।
अश्वपत्यादिभ्यश्च (लघुसिद्धान्त कौमुदी 4।1।84) - एभ्योऽण् स्यात्प्राग्दीव्यतीयेष्वर्थेषु। अश्वपतेरत्यादि आश्वपतम्। गाणपतम्। अपत्य अर्थ अश्वपति आदि के योग में अण् प्रत्यय' होता है।
अश्वपति+अण् = आश्वपतम्, गणपति + अण् = गाणपतम्।

74. **शिशुपालवधमहाकाव्ये नारदः कस्य सन्देशं वासुदेवाय आनीतवान्?**

(a) विष्णोः (b) इन्द्रस्य
(c) बृहस्पतेः (d) कामदेवस्य

Ans. (b) : शिशुपालवध महाकाव्ये नारदः 'इन्द्रस्य' सन्देशं वासुदेवाय आनीतवान्। शिशुपाल वध महाकाव्य में नारद, इन्द्र का सन्देश लेकर वासुदेव (श्रीकृष्ण) के पास जाते हैं। यह महाकवि माघ प्रणीत बृहत्त्रयी में परिगणित महाकाव्यों में से एक है। बृहत्त्रयी के ग्रन्थ इस प्रकार हैं– किरातार्जुनीयम् – भारवि (18सर्ग), शिशुपालवधम् - माघकृत (20 सर्ग) और नैषधीयचरितम् - श्रीहर्ष कृत (22 सर्ग)।

75. सांख्यमतानुसारेण अतीन्द्रियपदार्थानां सिद्धिः केन प्रमाणेन भवति?

(a) शेषवदनुमानेन
(b) सामान्यतोदृष्टानुमानेन
(c) पूर्ववदनुमानेन
(d) प्रत्यक्षप्रमाणेन

Ans. (b) : सांख्यमतानुसारेण अतीन्द्रियपदार्थानां सिद्धिः'सामान्यतोदृष्टानुमानेन' प्रमाणेन भवति। सांख्यमत के अनुसार अतीन्द्रिय पदार्थो की सिद्धि सामान्यतोदृष्ट अनुमान प्रमाण से होती है।

सामान्यस्तु दृष्टादतीन्द्रियाणां प्रतीतिरनुमानात्।
तस्मादपि चासिद्धं परोक्षमाप्तागमात् सिद्धम्।

सामान्यतोदृष्ट अनुमान प्रमाण से तो अतीन्द्रिय पदार्थों की प्रतीति होती है और परोक्ष विषय उससे (सामान्यतोदृष्ट से) भी अगम्य होता है (परोक्ष विषय आगम प्रमाण से सिद्ध होता है।

76. अधोलिखितं युग्मद्वयं सुमेलयन् शुद्धं विकल्पं चिनुत –

सूची-I	सूची-II
(a) प्रवीणः	(1) अर्थविस्तारः
(b) पृथिवी	(2) अर्थादेशः
(c) आकाशवाणी	(3) अर्थसङ्कोचः
(d) देवानां प्रियः	(4) अर्थापकर्षः

विकल्पा :–

	A	B	C	D
(a)	1	4	3	2
(b)	4	2	1	3
(c)	2	1	3	4
(d)	1	3	2	4

Ans. (d) :

प्रवीणः	अर्थविस्तारः
पृथिवी	अर्थसङ्कोचः
आकाशवाणी	अर्थादेशः
देवानां प्रियः	अर्थापकर्षः

77. 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' उक्तेरस्याः मूलस्रोतोऽस्ति –

(a) कठोपनिषद्
(b) वेदान्तसारः
(c) छान्दोग्योपनिषद्
(d) ईशावास्योपनिषद्

Ans. (d) : 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' उक्तेरस्याः 'ईशावास्योपनिषद्' मूलस्रोतोऽस्ति। इस सूक्ति वाक्य का मूल स्रोत ईशावास्योपनिषद् है, पूर्ण मंत्र इस प्रकार है-

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयं सह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययाऽमृतमश्नुते॥

यह ईशावास्योपनिषद् का 11वाँ मन्त्र है।

78. 'मधु द्विरेफः कुसुमैकपात्रे पपौ प्रियां स्वामनुवर्तमानः। शृङ्गेण च स्पर्शनिमीलिताक्षीं मृगीमकण्डूयत कृष्णसारः॥'
इत्यत्र कोऽस्ति?

(a) रसः
(b) रसाभासः
(c) भावः
(d) न कोऽपि पूर्वेषु

Ans. (b) : मधु द्विरेफः कुसुमैकपात्रे पपौ प्रियां स्वामनुवर्तमानः। शृङ्गेण च स्पर्शनिमीलिताक्षीं मृगीमकण्डूयत कृष्णसारः।।
इत्यत्र 'रसाभासः' अस्ति। इसमें रसाभास है।
जब नायक और नायिका के प्रति प्रेम होता है तो रस होता है देव-विषयक या ऋषि विषयक प्रेम होता है, तो वहाँ भाव होता है, तथा जब पशु पक्षियों का प्रेम होता है तो वहाँ रसाभास होता है उपर्युक्त श्लोक में भौंरा मृग आदि पक्षियों का प्रेम प्रकट हो रहा है अतः यहाँ पर रसाभास है।

79. शुष्केन्धाग्निवत् स्वच्छजलवत् संहसैव यः व्याप्नोति सः–

(a) प्रसादः
(b) माधुर्यम्
(c) ओजः
(d) लावण्यम्

Ans. (a) : शुष्केन्धाग्निवत् स्वच्छजलवत् संहसैव यः व्याप्नोति सः 'प्रसादः'। शैथिल्यं प्रसादः। यथा- प्रसादगुणः ओजसा सह संप्लवात् सद् शुद्धस्तु दोष एवेति।

80. प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेषविचक्षणाः।
भवन्ति कस्यचित्पुण्यैर्मुखे वाचो गृहेस्त्रियः॥
इत्यत्र श्लेषमाध्यमेन कस्य प्रशंसा कृताऽस्ति?

(a) कविप्रशंसा
(b) स्वकुलप्रशंसा
(c) स्त्रीप्रशंसा, वाक्यप्रशंसा, पुण्यभाजनस्य प्रशंसा
(d) आर्यावर्त प्रशंसा

Ans. (c) : प्रसन्नाः कान्तिहारिण्यो नानाश्लेष विचक्षणाः।
भवन्ति कस्यचित्पुण्यैर्मूखे वाचो गृहेस्त्रियः।। इत्यत्र श्लेष माध्यमेन 'स्त्रीप्रशंसा, वाक्यप्रशंसा, पुण्यभाजनस्य प्रशंसा कृताऽस्ति। इस श्लोक में श्लेष अलङ्कार के माध्यम से स्त्री, वाणी और पुण्यभाजन की प्रशंसा की गई है।